© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

जनजातीय क्षेत्रों में नक्सली समस्या एवं समाधान

डॉ. राजन गुप्ता
समाजशास्त्र विभाग,
मॉ गायत्री महाविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश– नक्सलवाद कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के उस आंदोलन का अनौपचारिक नाम है, जो भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ है। भारत में नक्सली हिंसा की शुरूआत वर्ष 1967 में पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग जिले के नक्सलवादी गांव से हुई थी। भारत में ज्यादातर नक्सलवाद माओवादी विचारधाराओं पर आधारित है। इसके जरिये मौजूदा शासन व्यवस्था को उखाड़ फेकना चाहते हैं और लगातार युद्ध के जरिये जनताना सरकार लाना चाहते है। भारत में जहां वामपंथी आन्दोलन पूर्व सोवियत संघ से प्रभावित था वहीं आज का माओवाद चीन से प्रभावित है। ये मौजूदा माओवाद हिंसा और ताकत के बल पर समानांतर सरकार बनाने का पक्षधर है। इसके अलावा अपने उद्देश्य के लिये थे किसी भी प्रकार की हिंसा को उचित मानते है। प्रस्तुत शोध पत्र में जनजातीय क्षेत्रों में नक्सली समस्या एवं समाधान पर चर्चा की गयी है।

मुख्य शब्दः– नक्सलवाद, माओवाद, जनताना सरकार, समानांतर सरकार

निश्चित ही आज यह प्रश्न विचारणीय है, कि नक्सलवाद मूल रूप से कानूनी समस्या है या विषमता से उत्पन्न ..... है। विचारकों का एक वर्ग जहां नक्सलवाद को आतंकवाद जैसी गतिविधियों से जोड़कर इसे देश के आंतरिक सुरक्षा के लिये सबसे बड़ी चुनौती मानता है तो दूसरा वर्ग इसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विषमताओं एवं दमन शोषण से उपजा एक स्वतः स्फूर्त विद्रोह समझकर इसका पक्षपोषण करता है।

भारत में नक्सली हिंसा की शुरूआत वर्ष 1967 में पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग जिले के नक्सलवादी नामक गाँव से हुई और इसीलिये इस उग्रपंथी आंन्दोलन को नक्सलवाद के नाम से जाना जाता है।[i] जमीदारों द्वारा छोटे किसानों के उत्पीड़न पर अंकुश लगाने के लिये सत्ता के खिलाफ चारू मजूमदार, कानू सन्थाल और कन्हाई चटर्जी द्वारा शुरू किये गये इस सशस्त्र आंदोलन को नक्सलवाद नाम दिया गया।

भारत के विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों में नक्सलवाद के उदय का कारण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक असमानता और शोषण है बेरोजगारी, असंतुलित विकास जैसे ऐसे अनेको कारण है, जो नक्सली हिंसा को लगातार बढ़ा रहे है।[ii]

जनजातीय क्षेत्रों में नक्सलवाद के कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझा जा सकता है यथा –

1. **जल जंगल जमीन :**

- भूमि सुधार कानूनों का दुरूपयोग।
- सरकारी और सामुदायिक जमीनों को हड़पना।
- बिना उचित हर्जाना और पुनर्वास व्यवस्था के भूमि अधिग्रहण।
- सदियों से चली आ रही आदिवासी जंगल व्यवस्था को बिगाड़ देना।

2. शासन व्यवस्था की असफलता :

- प्रशासनिक अक्षमता
- अकुशल और उत्साह विहीन सरकारी कर्मचारियों का ढुलमुल रवैय्या।
- सरकारी योजनाओं का जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन न होना।
- स्थानीय लोगों के कल्याण के लिये बने नियम कानूनों की धज्जियां उड़ाना।

3. सामाजिक तिरस्कार और अपेक्षा :

- मानवाधिकारों का उल्लंघन।
- व्यक्ति के गरिमा का हनन।
- समाज के मुख्य धारा से अलगाव।
- सरकार तथा शासन के प्रति असंतोष।

4. **विकासात्मक कार्यो में कमी :**

- बेरोजगारी।
- गरीबी।
- मूलभूत सुविधाओं का अभाव।
- शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी।

नक्सलियों का मानना है कि वे उन आदिवासियों और गरीबों के लिए लड़ रहे है, जिनकी सरकार दशको से अनदेखी की है। वे जमीन के अधिकार एवं संसाधनों के वितरण के संघर्ष में स्थानीय सरोकारों का प्रतिनिधित्व करते है।[पपप] अनेक ऐसे जनजातीय बहुल इलाके हैं जहां जीवन यापन की बुनियादी सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं है, लेकिन इन इलाकों की प्राकृतिक संपदा के दोहन में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों की कम्पनियों ने कोई कमी नहीं छोड़ी है। यहां न सड़के है न पीने के लिये पानी की व्यवस्था न शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधायें और न ही रोजगार के अवसर। सामाजिक विषमता ही वर्ग संघर्ष की जननी है।[पअ] आजादी के बाद भी एक विषमता में कोई कमी नहीं आई। नक्सलियों के लिये यह एक बहुत बड़ा मानसिक हथियार है।

नक्सलवाद के परिणाम :

भारत में नक्सलवाद के कारण आन्तरिक सुरक्षा पर हमेशा खतरा बना रहता है, इसके दुष्परिणाम अधोलिखित है, यथा –

- देश में एकता एवं अखण्डता के समक्ष खतरा उत्पन्न होना।
- देश के आन्तरिक छवि को नुकसान होना।
- देश के अन्तर्राष्ट्रीय छवि को नकसान होना।
- देश विरोधी शक्तियों का प्रोत्साहन।
- जानमाल के हानि पहुंचना तथा हमेशा भय का माहौल बना रहना।
- देश की आर्थिक प्रगति में रूकावट।

नक्सली हिंसा की वर्तमान स्थिति :

नक्सली समस्या को लेकर ढेर सारी चुनौतियों के बावजूद वर्तमान में जनजातीय क्षेत्रों में नक्सलवाद की स्थिति में कमी आयी है। वर्ष 2008 में देश के कुल 223 जिले नक्सल प्रभावित थे। वर्ष 2014 में यह संख्या 161 रह गई। वर्ष 2017 में नक्सल प्रभावित जिलों की संख्या और घटकर 126 रह गई। छत्तीसगढ़, झारखण्ड, ओडिशा, विहार, उत्तर प्रदेश, को सबसे ज्यादा नक्सल प्रभावित राज्यों में रखा गया है।[अ]

सरकारी प्रयास :

- सरकार नक्सलवाद से निपटने के लिये बहुआयामी रणनीति अपना रही है।
- इससे सुरक्षा एवं विकास से संधित उपाय तथा आदिवासी एवं अन्य कमजोर वर्ग के लिोगों को उनका अधिकार दिलाने से सम्बन्धित उपाय शामिल है।
- प्रभावित क्षेत्रों में सरकार बुनियादी ढांचे, कौशल विकास, शिक्षा, ऊर्जा, और डिजिटल सम्पर्कता का यथा संभव विस्तार करने का प्रयास कर रही है।
- जून 2013 में आजीविका योजना के तहत रोशनी नामक विशेष पहल की शुरूआत की गई थी। ताकि सर्वाधिक नक्सल प्रभावित जिलों में यूवाओं को रोजगार के लिये प्रशिक्षित किया जा सके।

सुझाव :

जनजातीय क्षेत्रों में उत्पन्न हो रहे नक्सली विचारधारा का मूल कारण आधारभूत समस्याएं है जिसके कारण जनजातीय समाज मुख्य धारा के साथ सामंजस्य स्थापित करने में असक्षम है। यही असक्षमता के कारण उनके मन में असंतोष है, जिसकी वजह सिर्फ वो सरकार को मानते है। इसलिये सरकार को इस विचारधारा के विरूद्ध और गम्भीरता से अमल करने की आवश्यकता है। भारत में नक्सलवाद की समस्या एक संतुलित दृष्टिकोण पर आधारित है, इसे केवल कानून व्यवस्था रूप में नहीं देखा जा सकता बल्कि एक सामाजिक आर्थिक रूप में भी चिन्हित किया जाना चाहिए।[vi]

इससे अतिरिक्त निम्न सुझा मददगार साबित हो सकते हैं–

- ऐसे प्रशासन की स्थापना सुनिश्चित की जानी चाहिए जो भ्रष्टाचार मुक्त तथा जन सहयोगी हो।
- नक्सल विरोधी अभियानो के दौरान मानवाधिकारों की रक्षा की जानी चाहिए।
- सुरक्षा एवं आसूचना एजेसियो को अत्याधुनिक तकनीकों एवं अन्य सुविधाओं से लैसे किया जाना चहिए।
- आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति को अधिक प्रभी बनाया जाना चाहिए।
- भूमि सुधार कानूनों को सफलतापूर्वक लागू किया जाना चाहिए, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि के असमान वितरण की समस्या।

सन्दर्भ–

[i]. w.w.w.wikipedia.org

[ii]- कुरूक्षेत्र, भारत सरकार (2013), अंक (5), जून

[iii]- क्रानिकल मासिक पत्रिका (2016) पृष्ठ – 134

[iv]. मुखोपध्याय, अशोक नगरः द नक्सलाइट हॉट द आइ ऑफ द पोलिस

[v]. दैनिक समाचार पत्र, 21 जनवरी, 2017

[vi]. बोस, दीपायन, नक्सलवाड़ी और उत्तरवर्तीय चार दशक, एक सिंहावलोकन।